28/07/2020

General Psychology

Paper I

B.A. I (Honours)

Give the meaning of Retroactive Inhibition. Throw light upon its role in Forgetting.

पृष्ठोंमुख अवरोध का अर्थ बताएं। विस्मरण में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालें।

पृष्ठोंमुख अवरोध का अर्थ (Meaning of Retroactive Inhibition) –

विस्मरण एक ऐसी मानसिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी पूर्व-अनुभूतियों का recall या recognition करने में असमर्थ रहता है। विस्मरण के कई कारक हैं जिनमें एक प्रधान कारक retroactive inhibition (RI) है। धारण-अंतराल में जब व्यक्ति किसी नए पाठ या विषय को सीखता है तो इसका प्रभाव मौलिक पाठ (original task) के सीखने से उत्पन्न स्मृति चिन्हों पर पड़ता है जिसका परिणाम यह होता है कि मौलिक विषय के स्मृति चिन्ह कमज़ोर पड़ जाते हैं और उनका विस्मरण हो जाता है। उसे ही पृष्ठोंमुख अवरोध कि संज्ञा दी जाती है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि पाठ 'अ' को सीखने के बाद यदि हम पाठ 'ब' सीखते हैं और फिर पाठ 'अ' का recall करते हैं तो पाठ 'ब' के सीखने से उत्पन्न स्मृति चिन्हों द्वारा उसमें बाधा पहुँचती है। इस बाधा या प्रावरोध को ही पृष्ठोंमुख अवरोध कहा जाता है। बाधा जितनी ही अधिक होती है, विस्मरण की मात्रा उतनी अधिक होती है।

विस्मरण में पृष्ठोंमुख अवरोध का महत्त्व या भूमिका (Role of Retroactive Inhibition or RI in Forgetting) –

विस्मरण में पृष्ठोंमुख अवरोध को Muller-Pilzecker, Melton-Irvin तथा Jenkins-Dallenbach ने एक अति महत्वपूर्ण कारक बताया है। इन लोगों ने यह स्पष्टः कहा है कि समय का बीतने अपने-आप में विस्मरण का एक कारण नहीं है, बल्कि उस समय-अंतराल में जब हम कुछ अन्य विषयों को सीखते हैं तो इससे मौलिक विषय के स्मृति चिन्ह कमजोर पड़ जाते हैं जिनके कारण हम उसका recall नहीं कर पाते हैं। इससे विस्मरण की मात्रा बढ़ती है। RI के महत्त्व को दिखाने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने कई प्रयोग किये हैं जिनमें Jenkins and Dallenbach द्वारा किये गए प्रयोग का उल्लेख यहां अपेक्षित है। इस प्रयोग में मात्र दो subjects थे, जिन्हें मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में ही रात में सोने का आग्रह किया गया। इन दोनों प्रयोज्यों को दस निरर्थक पदों की एक सूचि को सुबह तथा एक सूचि को शाम में सिखाया गया।

दिन में सूचि को सीखने के बाद वे अपनी सभी सामान्य क्रियाओं को (जैसे- कॉलेज की कक्षा में शिक्षकों का व्याख्यान सुन्ना, पुस्तकालय में पढ़ना, दोस्तों के साथ गप-शाप आदि) करते थे। परन्तु सीखने के एक घंटा, दो घंटा, चार घंटा तथा आठ घंटा बाद अपने-आप प्रयोगशाला में आ कर सुबह सीखी गयी सूचि को recall कर जाते थे। शाम की सूचि को सीखने के बाद वे आराम करते थे और रात में सो जाते थे। लेकिन, प्रयोगकर्ता समय पर अर्थार्थ एक घंटा, दो घंटा, चार घंटा तथा आठ घंटा बाद उन्हें नींद से उठा कर सूचि का recall लेता था। परिणाम में देखा गया की दिन में प्रयोज्यों द्वारा किया गया recall रात में किये गए recall की अपेक्षा काफी कम था जिसका स्पष्ट मतलब यह था कि दिन में विस्मरण की मात्रा रात में विस्मरण की मात्रा की अपेक्षा अधिक थी। इसका कारण यह पाया गया कि दिन में सूचि को सीखने के बाद subjects अन्य दूसरी तरह के कार्यों को भी करते थे जिनसे उत्पन्न स्मृति चिन्ह सूचि के recall में बाधा पहुंचाते थे। रात में ऐसी बढ़ा उत्पन्न करने वाला कोई भी कार्य प्रयोज्य नहीं करते थे। कहने का मतलब यह हुआ कि RI दिन में रात की अपेक्षा अधिक उत्पन्न हो रहा था। इस लिए विस्मरण अधिक होता था। बाद में Ekstrand, Melton and Irvin ने भी अपने-अपने प्रयोगों से इस तथ्य की सम्पुष्टि की कि विस्मरण में RI का महत्त्व प्रत्यक्ष है।

कई मनोवैज्ञानिकों ने RI के क्षेत्र में किये गए अध्ययनों के आधार पर यह बताया है कि RI कई कारकों से प्रभावित होता है। क्यूंकि इन कारकों से RI की मात्रा घटती या बढ़ती है, अतः इनका महत्त्व RI के लिए स्वभावतः अधिक है और जब RI के लिए इनका महत्त्व काफी है तो फिर अपने-आप विस्मरण के लिए भी इनका महत्व काफी हो जाता है। अतः इन कारकों की व्याख्या यहां अपेक्षित है। ऐसे कारक निम्नांकित तीन हैं -

1. **<u>विषय की समानता (Similarity of Task) –</u>**
   मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययनों के आधार पर यह बताया है कि जब मौलिक पाठ एवं अवरोधक पाठ (interfering task) में अधिक समानता होती है तो RI की मात्रा काम होती है। फलतः ऐसी परिस्थिति में विस्मरण काफी काम होता है। परन्तु जैसे-जैसे इन दोनों पाठों की समानता कम होती है वैसे-वैसे एक सीमा तक RI की मात्रा बढ़ती है, अर्थार्थ विस्मरण अधिक होता है। फिर उस सीमा के बाद भी यदि समानता घटती जाती है तो ऐसी परिस्थिति में मौलिक पाठ एवं अवरोधक पाठ से पूणतः भिन्न हो जाता है और तब ऐसी परिस्थिति में फिर RI कम होने लगता है, अर्थार्थ विस्मरण कम होने लगता है। मनोविज्ञान में मौलिक पाठ तथा अवरोधक पाठ की समानता में हुए इन परिवर्तनों के फलस्वरूप जो विस्मरण की मात्रा में कमी-बेशी होती है उसे Skaggs-Robinson hypothesis कहा गया है।

2. **<u>अंतर्वृष्ट सीखने की मात्रा (Amount of Interpolated Learning) –</u>**
   मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गए प्रयोगों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि RI की मात्रा अंतर्वृष्ट पाठ या अवरोधक पाठ के सीखने की मात्रा द्वारा प्रभावित होती है। Melton-Irvin द्वारा किये गए प्रयोग के परिणाम में यह पाया गया कि अवरोधक सूचि के बीसवें प्रयास के अभ्यास तक RI की मात्रा बढ़ती है परन्तु चालीसवें प्रयास तक अभ्यास जारी रहने से इसकी मात्रा में थोड़ी कमी आ जाती है। इस परिणाम से स्पष्ट है कि अंतर्वृष्ट सीखने की एक मात्रा तक अभ्यास जारी रहने से RI बढ़ता है परन्तु यदि उस खास मात्रा से भी अधिक प्रयासों तक अवरोधक या अंतर्वृष्ट सूचि को सीखने दिया जाता है तो ऐसी परिस्थिति में RI की मात्रा में थोड़ी कमी आ जाती है। ध्यान रहे

की RI की मात्रा में वृद्धि होने का मतलब है विस्मरण में वृद्धि तथा RI की मात्रा में कमी होने का मतलब है विस्मरण में कमी।

3. **<u>अवरोधक पाठ की संख्या (Number of Interfering Tasks) –</u>**
मनोवैज्ञानिकों ने अपने प्रयोग के आधार पर यह भी दिखलाया है कि RI (अर्थार्थ विस्मरण) की मात्रा अवरोधक पाठ की संख्या पर निर्भर करती है। Underwood ने इस तथ्य की सम्पुष्टि अपने एक प्रयोग से की है जिसमें चार विभिन्न अवस्थाओं में अवरोधक सूचि भिन्न-भिन्न संख्याओं में सीखा कर मौलिक सूचि का recall करवाया गया। पहली अवस्था में अवरोधक सूचि की संख्या शुन्य थी, दूसरी अवस्था में अवरोधक सूचि की संख्या 2 थी, तीसरे में 4 थी तथा चौथे में 6 थी। परिणाम में देखा गया कि recall की मात्रा सबसे अधिक शुन्य सूचि अवस्था में थी तथा सबसे कम चौथे अवस्था में थी। दूसरे शब्दों में RI अर्थार्थ विस्मरण की मात्रा चौथी अवस्था में सबसे अधिक तथा पहली अवस्था में सबसे कम थी। प्रयोग के परिणाम से यह स्पष्ट हो जाता है कि RI की मात्रा अवरोधक पाठ की संख्या पर निर्भर करती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विस्मरण में RI तथा उससे सम्बंधित कारकों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com